REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2023

राजस्थान के जौहर, साके और महासतिओं का देवल

डॉ. माया ए. पंचाल
अध्यापक आर्टस कोलेज, पालडी, ता. दियोदर, जि. बनासकांठा.

Abstract:

राजस्थान के प्राचीन इतिहास पर द्रष्टि निक्षेप करे तो विदित होगा कि प्रस्तुत नामकरण से पूर्व राजस्थान प्रदेश के विविध भूभाग भिन्न भिन्न नामो से जाने जाते थे तथा समय समय पर यहाँ विभिन्न राजवंशो का शासन रहा था । उदाहरणतः राजस्थान के सैकत भू-भाग (जिसके अंतर्गत मारवाड तथा थार रेगिस्तान का भू-क्षेत्र जैसलमेर, बीकानेर, बाडमेर आदी जिल्ले सम्मलित थे।) के लिए मरु था मरुदेश का उल्लेख हमे ऋग्वेद, महाभारत, वृहतसंहिता आदि प्राचीन ग्रंथो तथा रुद्रदामन के जूनागढ अभिलेख तथा पाल अभिलेखो में मिलता है ।[1]आगे चलकर मरुदेश केवल मारवाड आदि रेतीले भू-भाग का ही वाचक न रहकर अधिक व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होने लगा जैसे की यहाँ की भाषा **डिं गल** या **मारवाडी** के लिए व्यवहत शब्दो –**मरुभाषा, मरुभूम-भाषा, मरुबानी** आदि से प्रकट है ।

राजस्थान के हर भौगोलिक क्षेत्र या अंचल का अपना गौरवशाली इतिहास और विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है और राजस्थान के प्राचीन दुर्गो में जौहर – साकें हुए इसके चिह्न आज भी दिखने को मिलते है और महासतिओं का देवल भी देखने को मिलते है इसलिए प्राचीन एतिहासिक व सांस्कृतिक परंपराओं की कुछ एसी ही गौरव गरिमा का भाव सुरक्षित है ।

Keywords: राजस्थान के जौहर, साके और महासतिओं का देवल

प्रस्तावनाः

इस शोध पत्र में राजस्थान के जौहर, साके और महासतिओं का देवल के स्थापत्य को बताया गया है । इस में **राजस्थान के प्राचीन दुर्गो में जौहर का जिक्र मिलता है** और चित्तौड दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग, जोधपुर दुर्ग, आमेर दुर्ग, रणथम्भौर दुर्ग, जालौर दुर्ग आदि का समावेश कीया गया है । **राजस्थान के गौरवशाली इतिहास में "जौहर तथा साकों का अत्यंत विशिष्ट स्थान है ।" यहाँ के रणबोंकुरे वीर राजपूत सैनिको तथा उनकी स्त्रीयों ने पराधीनता को स्वीकार करने की बजाए सहर्ष मृत्यु का आलिंगन करते हुए अपनी जान मातृभूमि पर न्यौछावर कर दी।** जौहर व साका उस स्थिती में किए गए जब शत्रु को घेरा डाले बहुत अधिक दिन हो गए और अब युध्ध लडे बिना नहीं रहा जा सकता ।

जौहर युध्ध के बाद महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों व व्यभिचारों से बचने तथा अपनी पवित्रता कायम रखने हेतु महिलाएँ अपने कुल देवी-देवताओं की पूजा करते जलती चिताओं में कूद पडती थी । वीरांगना महिलाओं का यह आत्म बलिदान का कृत्य जौहर के नाम इतिहास में विख्यात हुआ ।

साका– महिलाओं को जौहर की ज्वाला में कूदने का निश्चय करते देख पुरुष केशरिया वस्त्र धारण कर मरने मारने के निश्चय के साथ दुश्मन सेना पर टूट पडते थे। इसे साका कहा जाता है ।

राजस्थान का चितौड दुर्ग भारतवर्ष में स्वाधीनता का प्रेरक एवं स्वतंत्रता प्रेमियों व देशभक्तों का तीर्थ स्थल है । जो वीर राजपूतो के मान, मर्यादा, शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान तथा शूरवीरता का प्रतीक है । यह सांगा के पराक्रम, कुम्भा के शौर्य, पद्मिनी के जौहर, गोरा बादान के बलिदान, साका का रक्त रंजन, मीरां की भक्ति, माँ के बलिदान व पन्ना के त्याग की कहानी कहता है । सम्पूर्ण दुर्ग एतिहासिक स्मारको का अजायबघर है । इसके लिए ठीक ही कहाँ गया है कि....

"गढ तो गढ चित्तौडगढ बाकी सब गढैया ।"[2]

प्राचीन दुर्ग पर हुए जौहर एवं साकेः

जौहरः यह राजस्थान की प्राचीन प्रथा थी । महिलाएं अपने स्वाभिमान और सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देती थी ।

केसरियाः जब वीरो को लगता था कि वे युध्ध नही जीत पाएंगे तब मरने मारने की भावना लेकर सिर पर केशरिया धारण करते थे और युध्ध में उतर जाते थे ।

शाकाः जब जौहर और केसरिया साथ में हो तब उसे शाका कहा जाता है ।

रणथंभौर का जौहर-शाकाः

यह राजस्थान का पहला शाखा है । इस समय रणथंभौर के पराक्रमी शासक राव हम्मीर देव चौहान थे और 1301 में अलाउद्दीन खिलजी मुहम्मदशाह (महमोंशाह) को अपने यहाँ शरण प्रदान की जिसे दंडित करने तथा अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु रणथंभोर पर एक विशाल सेना के साथ जोरदार आक्रमण किया शरणागत वत्सलता के आदर्श और अपनी आन की रक्षा करते हुए अपने विश्वस्त यौध्धाओं ने केसरिया किया व **हम्मीरदेव चौहान की पत्नी रंगदेवी के** नेतृत्व में जौहर हुआ । ध्यान देने योग्य **हम्मीरदेव चौहान की पुत्री देवल/पद्माने 'पदमला तालाब'** में कूदकर **जल जौहर** किया । इसलिए राजस्थान में **ई. 1301 में अलाउद्दीन के समय ये पहेला जौहर शाका हुआ ।**

चित्तौडगढ दुर्ग का जौहरः

मेवाड के प्राचीन इतिहास का प्रारंभ नगरी (माध्यमिका) से हुआ । मध्यमिका शिव जनपद की राजधानी भी रहा । शिवियों के बाद मालव कुल व शाल्य क्षेणियों के जनपद भी यहाँ पर स्थापित हुए।

एतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार मौर्य शासक चित्रांगद मौर्य ने चित्तौडगढ दुर्ग बनवाया था। इस वंश के अंतिम शासक मानमोरी द्वारा बनवाया गया । तालाब आज भी किले के भीतर मौजुद है । **जिसे चतरंगमोरी या मानमोरी तालाब कहते है ।** इस तालाब के आगे दबे हुए खण्डहरों का उत्खनन किया जाए तो छिपा हुआ इतिहास सामने आ सकता है।[3]

इतिहासकार मानते है कि 8वी सदी में बप्पाने अंतिम मौर्य शासक मानमौरी को मारकर दुर्ग प्राप्त किया । बप्पा के बाद मेवाड के 18 शासकों के संबध में कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है । इस वंश की दो शाखाए बन गई इसमें **एक शाखा रावल** और **दुसरी राणा शाखा** प्रारंभ हुई । सन 1213 में रावल जैतसिंह मेवाड की गद्दी पर बैठा, वह मेवाड की राजधानी नागदा से हटाकर चित्तौड ले आया । तब से 1567 तक चित्तौड मेवाड की राजधानी रहा । इसने ग्यासुद्दीन तगलघ को पराजित किया । इसके बाद 1433 ई. में राणा कुम्भा मेवाड की गद्दी पर वैठा । राणा कुम्भाने मेवाड के 84 दुर्गो में से 32 किले बनाए । वे स्वयं संस्कृत भाषा के विद्वान, संगीतज्ञ, कवि एवं श्रेष्ठ

वीणावादक थे । 1468 में कुम्भा की मृत्यु अपने पुत्र उदयकर्ण ने की और उदयकर्ण के छोटे भाई रायमामने उदयकर्ण को परास्त कर चित्तौड प्राप्त किया । रायमल के पुत्र महाराणा सांगा 1509 मं गद्दी पर बैठा ।

चित्तौडगढ का प्रथम शाका सन 1303 में हुआ जब दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजीने रणथंभौर विजय के बाद चित्तौड को आक्रान्ता किया । अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा तथा राणा रतनसिंह की अनिंध्य सुन्दरी रानी पद्मिनी को पाने की लालसा ही हमले का कारण बनी । रानी पदमिनी के नेतृत्व में जौहर हुआ । रावल रतनसिंह के सैनिको ने शाका किया ।[4]

दुसरा साका सन 1534 में हुआ । जब गुजरात के सुलतान बहारदुरशाहने एल विशाल सेना के साथ चित्तौड पर आक्रमण कर दिया । सांगा की **हाडी रानी कर्मावती** ने हुमायुं को राखी भेजकर रक्षा की प्रार्थना की । मेवाड के सरदार प्रतापगढ के रावत बाघासिंहने महाराणा के प्रतिनिधि के रुप में युध्ध का नैतृत्व किया । बाघासिंह पाडलपोल के समीप शहीद हुए तथा दुर्ग में राजमाता हाडी कर्मावती और दुर्ग की 13000 वीरांगनाओं के साथ जौहर किया । इन सभी महेलो में रहनेवाली स्त्रीओने जौहर का अनुष्ठान कर अपने प्राणों की आहुति दी।[5]

चित्तौड का तीसरा शाका ई. 1567 में अकबर के आक्रमण के समय हुआ । जयमल राठौड, पत्ता सिसोदिया और ईसरदास चौहान की रानियों के नेतृत्व में हिन्दु ललनाओं ने जौहर किया । जयमल पत्ता और कल्लाजी राठौड के नेतृत्व में हिन्दु वीरोंने शाका किया ।[6] इस दुर्ग में जौहर के निशान आज भी मौजुद है ।

जैसलमेर दुर्ग में हुए जौहर एवं शाका के निशानः

रेतीली बंजर भूमि में मन जीत ले सबका एसे कलात्मक स्थापत्य का अभार कला की द्रष्टि में विश्व में सबसे बडा किला सोनगढ विश्व जगत को पूंजी दी है जो आज भी हम यह धरोहर को देख शकते है तथा भाटी राजपूतो का शौर्य और बलिदान का प्रतिक समान रेतीले हीमे में खडा है सोनारगढ दुर्ग ।

ये सोनारगढ का किला आगे जाकर कुछ समय मुघलों के हाथ में चला गया । जैसलमेर का पहला शाका उस समय हुआ जब दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजीने विशाल सेना के साथ आक्रमण कर दुर्ग को घेर लिया । इसमें भाटी शासक रावल मूलराज, कुंवर रतनसी सहित अगणित योध्धाओं ने असिधारा में स्नान किया तथा वीरांगनाओं ने जौहर किया।[7]

दूसरा शाका फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल के प्रारंभिक वर्षो में हुआ । रावल, दूदा, त्रिलोक्सी व अन्य भाटी सरदारों और योध्धाओने शत्रु सेना से लडते हुए वीरगति पाई एवं दुर्गस्थ वीरांगनाओं ने जौहर किया । हिन्दु वीरो और वीरांगनाओंनबलिदान के रुपमें शाका, केशरीया, जौहर देखना पडा है । यह सोनारगढ किलें में दुसरा जौहर का निशान आझ भी बिरशाल बुर्झ के सुरजपोल और हवापोल के मुख्य दरवाजे पर जौहर के निशान उत्कीर्ण देखने को मिलता है । आज भी जौहर के निशान की सतीत्व के रुप में पूजा जाता है ।[8]

जैसलमेर का तीसरा शाका अर्ध शाका कहलाता है इसमें वीरों ने केशरिया तो किया लडते हुए वीरगति पाई । लेकिन जौहर नहीं हुए अतः इसे आधा शाका ही माना जाता है वह घटना ई. सन 1550 की है जब राव लूणकरण वहाँ का शासक था ।

गागरोण दुर्ग के शाके और जौहरः

गागरोण का दुर्ग दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के सबसे प्राचीन और विकट दुर्गो में से एक है । गागरोण का सर्वाधिक ख्यातनाम और पराक्रमी शासक भोज का पुत्र अचलदास हुआ। जिसके शासनकाल में गागरोण का पहला शाका हुआ । यह अचलदास मेवाड के महाराणा मोकल का दामाद था । ई.सन 1423 में सुलतान अलपखान गोरीने एक विशाल सेना के साथ गागरोण पर आक्रमण किया और दुर्ग को पूरी तरह से घेर लिया तब अचलदास ने अपने बंधु-बांधवो और यौध्धाओ सहित शत्रु से जूझते हुए वीरगति प्राप्त की तथा उसकी रानियों व दुर्ग की ललनाओं ने अपने को जौहर की ज्वाला में होम दिया ।

भोज तणै भुजबलां असुर दहवट्टा कीया ।

अचलदास गागरुंण कौट माथा सूं दीया ।।

ई.सन 1444 में महमूद खलजीने गागरोण पर एक विसाळ सेना के साथ जौरदार आक्रमण किया । तब गागरोण का दूसरा शाका हुआ । उस समय पाल्हवासी वहाँ का शासक था । मआसिरे "महमूदशाही"में आक्रमण का विस्तार से वर्णन हुआ है।[9]

जोधपुर के इस किले पर उनेक बार आक्रमण हुए । राव जोधा की मृत्यु के बाद बीकानेर राज्य के उनके पुत्र बीकाने राजचिह्न लेने के लिए सूजा ने शासनकाल में जोधपुर पर चढाई की परंतु उसकी **माता जसमादे** द्वारा मेल-मिलाप करवाये जाने पर वह वापस लौट गया ।

ई. 1544 में अफगान शासक शेरशाह सूरीने जोधपुर के किले पर अधिकार कर लिया और उसमें एल मस्जिद का निर्माण करवाया । जयपुर के महाराज जगतसिंहने ई. सन 1807 में अपनी विशाल सेना के साथ जोधपुर पर चढाई कर दी और किले को घेर दीया । जयपुर की सेनाओं ने दुर्ग पर जोरदार आक्रमण किया । इस आक्रमण का साक्षी गोलों के वे निशान आज भी अजयपोल की प्राचीरमें विधमान है और आगे एक और लोहापोल है इसमें राणियों द्वारा अपने राजा युध्ध पताका जितकर वापस आ रहे थे किसी गलत समाचार समजकर गलती से जौहर कर दिया वो निशान आज भी विधमान है और कोई आक्राताओ के द्वारा जौहर नहीं करना पडा।[10]

जालौर दुर्ग के जौहरः

जालौर का प्रसिध्ध शाका ई.सन 1311-1312 में हुआ । सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर पर आक्रमण किया । जालौर के पराक्रमी शासक कान्हडदेव सोनगरा (चौहान) और उसके पुत्र वीरमदेव के त्याग और बलिदान तथा वीरांगनाओं के जौहर की घटनाने इसे इतिहास में प्रसिध्धी दिलाई । कवि पद्मनाभ विरचित "कान्हडदे प्रबन्ध"नामक एतिहासिक काव्य में इस युध्ध का विशद वर्णन हुआ है।[11]

जालौर बहुत ही शक्तिशाली और अजेय दुर्ग है । जिसके द्वार कभी भी किसी विजेता के द्वारा नहीं खोले गये । चाहे वह कितना ही शक्तिशाली न हों ।

सिवाणा दुर्ग में जौहर के निशानः

किलो अणखलों यूं कहे, आव कल्ला राठौड ।
मो सिर उतरे मेहणो, तो सिर बांधै मौड ।।

राजस्थान में मौजुद सिवाणा दुर्ग वीरता और शौर्य की रोमांचक घटनाओं का साक्षी सिवाणा का किला काल के क्रुर प्रवाह को झेलता हुआ आज भी शान से खडा है ।

सिवाणा का पहला शाका ई.सन 1310 में हुआ जब वीर सातमदेव और सोम (सोमेश्वर) ने अलाउद्दीन खिलजी के भीषण आक्रमण का प्रतिरोध करते हुए प्राणोत्सर्ग किया तथा वीरांगनाओं ने जौहर की ज्वाला प्रज्जवलित की विजय के उपरांत दुर्ग का नाम खैराबाद रखा गया । **अल्लाउदीन का आश्रित लेखक अमीर खुसरो लिखता है... "वे राजपुत गजब के बहादुर और साहसी थे । उनके सिर के टुकडे टुकडे हो गये फिर भी वे युध्धस्थल पर अडे रहे।"** रबी उल अव्वल की 23 मंगलवार को खिलजी सैनिकोने सातमदेव का क्षत-विक्षत शब अलाउद्दीन के सामने प्रस्तुत किया, जिसने दुर्ग को नया नाम देकर बदल दिया । लेकिन अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के साथ ही सिवाणा पर उसके वंश का आधिपत्य समाप्त हो गया।

दुसरा शाखा मुगल बादशाह अकबर के शासनकाल में हुआ जब मोटा राजा उजयसिंह ने शाही सेना की सहायता से सिवाणा दुर्ग पर आक्रमण किया । मोटा राजा उदयसिंहने शहजादे सलीम के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया था । कल्ला इस विवाह सम्बन्ध को अनुचित व अपमानजनक मानता था और उदयसिंह से झगडा करता था । वास्तविक कारण चाहे जो भी रहा हो उदयसिंहने सिवाणा पर आक्रमण किया । कल्ला राठौड ने स्वाभिमान और वीरता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मोटा राजा उदयसिंह के साथ भीषण युध्ध किया और लडते हुए वीरगति प्राप्त की । कल्ला की पत्नी हाडी राणी (बूंदी के राव सूरजन हाडा की पुत्री) ने दुर्ग की ललनाओं के साथ जौहर का अनुष्ठान किया ।[12]

महासतिओं का देवलः

पत्थरों में छिपी यादगारों में हमारे इतिहास जानने के अमूल्य साधन उपलब्ध है । एसे साधनों में महासतियों की यादगारें बडे महत्व की है । **जिन स्थानों में राजपूत महिलाएँ या अन्य जातियें की महिलाएँ अपने पतियों के शब के साथ जलकर भस्म हो जाती थी उन स्थानों को महासतियों कहा जाता है ।** सती होने की प्रथा वैसे तो भारत में बडी पुरानी है, परंतु राजस्थान में मध्ययुग में विदेशी आक्रमणो से देश को बचाने के लिए सतत युध्ध होते रहे तो सामुहिक रुप में नारियों अपने सतीत्व की रक्षा में सहस्त्रों की संख्या में अपने पतियों के प्रतीकों के साथ सती होने लगी । उनकी स्मृति में उन स्थानों पर बडे बडे स्मारक भी बनने लगे । इन स्थानों में साधारण मृत्यु से मरने वाला, महाराजा तथा अन्य उच्च अधिकारियों को भी जलाया जाता था । और उनकी पत्नियों भी अपने आपको अग्नि को समर्पित करती थी । उन स्थानों में बहुधा छतरियों या देवल या देवलियों बनायी जाती थी । इनके मध्यमवर्ती स्थान पर शिवलिंग या शिलाखंड लगा दिया जाता था जिन पर राजाओं और सती होने वाली रानियों की प्रतिमाए बना दी जाती थी। राजस्थान में आज भी बडे बडे प्राचीन दुर्ग है वहां के आसपास के प्रदेश में सती-महासती का स्मारक स्थल आज भी विधमान है और कही जगह में देवले भी दिखने को मिलते है । ओर उसका कब सती हुए उसका शिलालेख भी उत्कीर्ण मिलते है । आज भी सती स्मारक और देवल की पूजा करने के हेतु बडी संख्या में नर-नारीयों जाते है । एसे स्थानों को बडी श्रध्धा की द्रष्टि से देखा जाता है ।[13]

राजस्थान वीरभूमि होने के नाते में वैसे तो गाँव-गाँव में एसे स्थान है जो हमे अनके वीरांगनाओ की स्मृति दिलाते है परंतु चित्तौड का बलिदान तथा बीकानेर आदि स्थानों के महासतियों के स्थल विशेष उल्लेखनीय है । चित्तौड का बलिदान संसार के इतिहास में प्रमुख स्थान रखता है । यहाँ लाखों की संख्या में वीर पुरुषो ने अपने देश के लिए प्राण न्यौछावर कर दिए । उनकी वीरांगनाएं भी लाखों की संख्या में सती हुई या जौहर-व्रत के द्वारा भस्म हो गयी । गौमुख कुण्ड तथा सूर्य कुण्ड के पास का भाग महासतियों का स्मारक स्थान है । जिसको देखसर दर्शको में असीम श्रध्धा और वीरत्व की प्रशंसा के भाव उमड आते है ।

उदयपुर के निकट आहड गाँव में **गंगादेभव नामक** तीर्थस्थान है जिनके निकट अहाते से घिरा हुआ महाराणाओं का दाह स्थान है । **जिसको महासतियों कहते है ।** महाराणा प्रताप के बाद राणाओं का अन्तेष्टि संस्कार बहुधा यहाँ होता रहा । यहाँ महाराणा अमरसिंह प्रथम के साथ **10 रानियों व खबासने और 9 सहेलियों सती हुइ थी जिनकी बाद में छतरियां बनायी गयी थी ।** अमरसिंह दितीय तथा संग्रामसिंह द्वीतीय की छतरियां भव्य है जो महाराणाओं के साथ होने वाली सतियों की याद दिलाती है ।[3]

जोधपुर के निकट मण्डोर में पंचकुण्ड नामक स्थान के समीप राजकीय स्मशान थे । जहाँ राव चूंडा, राव रणमल, राव जोधा तथा राव गांगा के स्मारक बने हुए है । जिनके साथ अनेक रानियों सती हुई थी । जोधपुर में आज भी सती स्मारको विधमान है ।

बीकानेर में भी बीकाजी की टेकरी सती स्थान का धोतक है जहाँ बीकाजी तथा उनके दो उत्तराधिकारी लूणकर्ण और जैतसी का हाट-संस्कार किया था और जहाँ उनके पीछे उनकी रानियों सती हुई थी । वे स्मारक आज कि स्थिती में छिन्न-भिन्न हो गये है । यहाँ राव कल्याणमल से लगाकर शार्दूलसिंह तक की छतरियों बनी हुई है । कुछ छतरियों लाल पत्थर की है तो कुछ रंगेमरमर की है। इनके आगे उनके साथ सती होने वाली रानियों की आकृतियों बनी हुई है । अंतिम राजपरिवार की स्त्री का नाम **दीपकुंवरी** था जो महाराजा सूरतसिंह के दुसरे पुत्र मोतीसिंह की राणी सती सन ई सन 1825 में हुई थी ।[14]

कुंभलगढ में मामादेव कुंड के पास भी सती स्मारक बने हुए और उसके अलावा जैसलमेर और मारवाड के एक गाँव बीढुं में मिला सती स्मारक राव सिंहा की मृत्यु तिथी निर्धारित करनेमें बडा सहायक है ।

सारांशः

राजस्थान के चित्तौड की प्रसिध्धि का मुख्य कारण यह है कि यहाँ हजारों क्षत्रियोंने लाखों सैनिको ने और अनगिनत वीरोंने अपने देश के मान की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया । यहाँ सेंकडो राजपूतो व अन्य जाति की महिलाओंने जीते जी अग्नि में प्रवेश

कर, जिसे "जौहर" कहते है । अपने प्राणों की आहुति दे डाली थी । वैसी तरह राजस्थान के जैसलमेर, सिवाणा, जालौर, गागरोण, रणथंभोर जैसे अनेक बार दुर्गो को जब जब घेरा गया, रक्तपात और "जौहर" एक साधारण सी घटना बन गयी थी । आज भी कई शिलालेखो की वंशावली से इतिहास का साक्षी होने का प्रतीत होता है ।

मध्ययुगीन वीर स्तम्भों पर योध्धा और उसके युध्ध सबंधी सामान और उसके पीछे होने वाली सतियों का अंकन रहता है । एसे वीर स्तम्भ 13वी सदी से 17वी सदी तक बहुत मिले है ।

आज हम इन मध्ययुगीन प्रतीकों को देखकर उस युग के स्थापत्य तथा सैनिक व्यवस्था का अध्ययन कर शकते है । आज भी हम उसके पुराने खण्डहरो में उस युग के वैभव, शौर्य तथा स्वातंत्र्य प्रेम की आत्मा को छिपी हुई पाते है । जिसका स्मरण करने से हमारे हृदय में राजस्थान के वास्तविक रुप का साक्षात्कार होता है और राजस्थान के स्थापत्य को समझने के लिए महासतियों की छतरियों बडे काम की है । कई स्थानों सतियों की छतरियों मुगल बारादरी के कक्ष की है ।

संदर्भः

1. Sharma (Dr.) Dasharath, Rajasthan State Through the Ages, Vol. ip. 11 Rajasthan state Archives.
2. साप्ताहिक उदय इण्डिया, समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार के आधार पर, 22 जून 2013
3. व्यास राजेश्वर, मेवाड की कला और स्थापत्य राजस्थान प्रकाशन जयपुर, 1988 पृ.86
4. ओझा गौरीशंकर हीराचंद, उदयपुर राज्य का इतिहास, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, पृ.726-727
5. वीर विनोद, कवि श्यामलदास, द्वितीय भाग, खण्ड-1 पृ.75
6. कुमार राजेश वीरता एवं शौर्य की भूमि चित्तौडगढ टुरिस्ट पब्लिकेशन दिल्ली 2010, पृ.22
7. डॉ. राघवेन्द्रसिं ह मनोहर राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान दिल्ही ग्रंथ अकादमी जयपुर 2019 पृ.18
8. ओझा दीनदयाल, जैसलमेर के जौहर शाके, शोध एव जौहर शाका स्मारिका जौहर स्मृति संस्थान चित्तौडगढ 2005 पृ.37
9. डे. उपेन्द्रनाथ, मेडिवल मालवा, मुंशीलाल मनोहरलाल, नई दिल्ली 1965, पृ. 81
10. अहमद निजामुद्दीन, तबकाते अकबरी, भाग-3, उपभाग-2 लो प्राईस पब्लिकेशन नई दिल्ही-1995 पृ. 32
11. मोहनलाल गुप्ता, जालौर का राजनीतक एवं सांस्कृतिक इतिहास पृ. 234
12. Siwana (A Strong fortress at the distance of 30 miles from jalore) Early Chauhan Dynasties.
13. Maharana Kumbha, by Har Bilas Sharda, Page 125-127.